एक सफल व्यक्तित्व

# चम्बल के चन्दन

काव्य धारा

उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

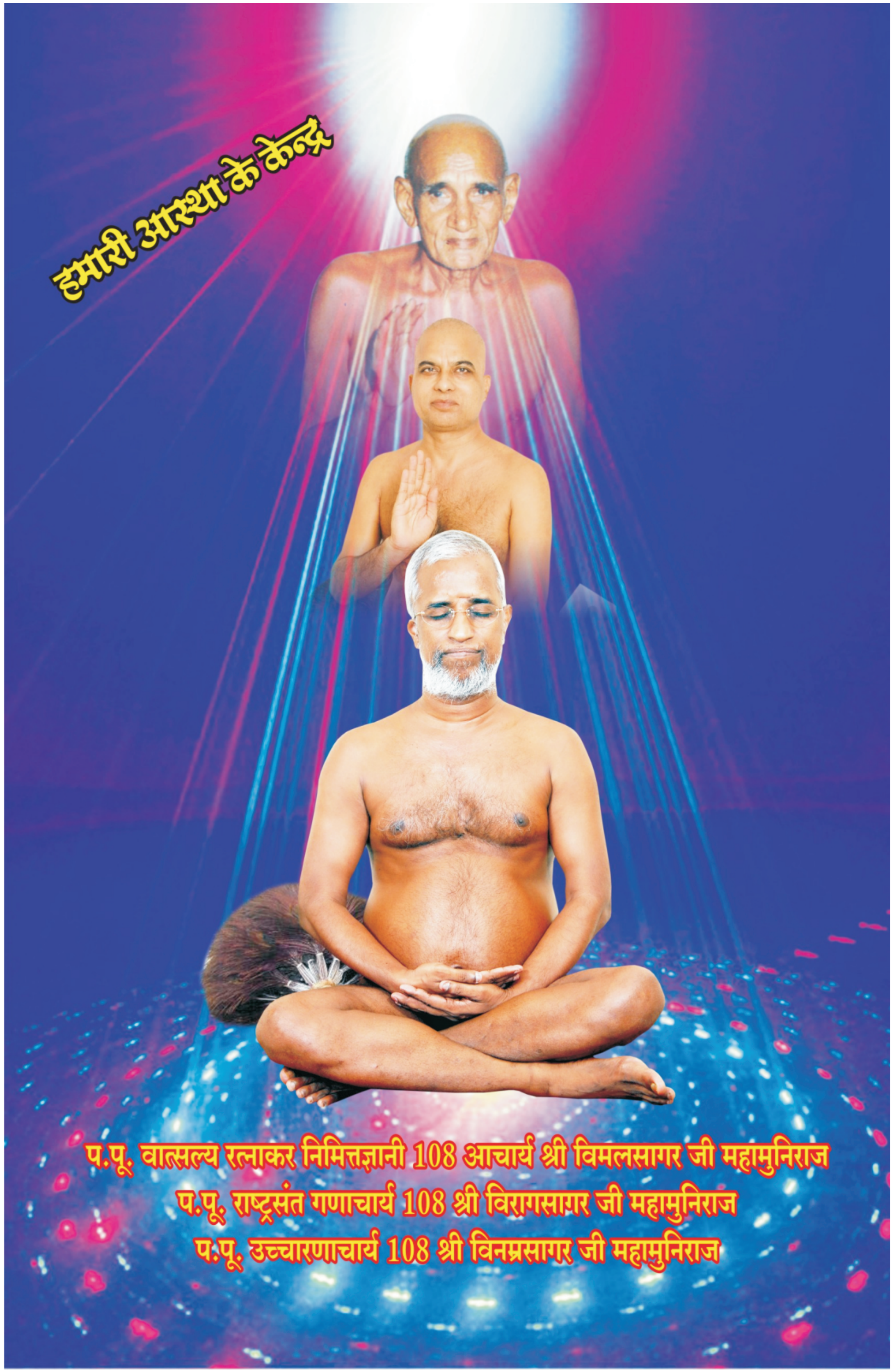


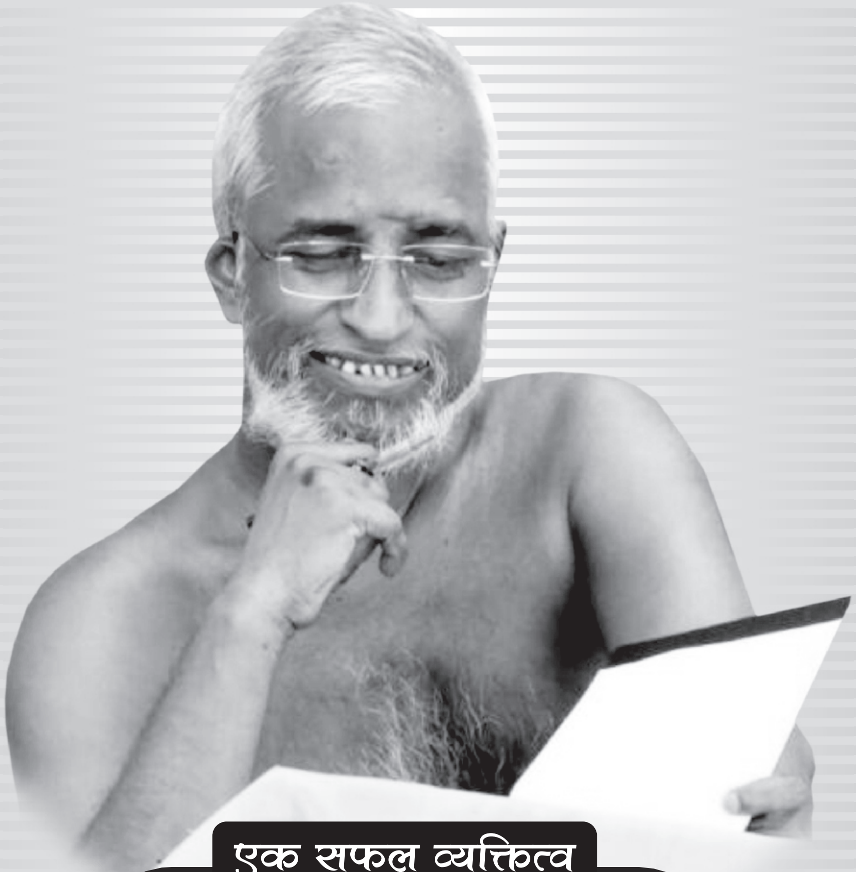

एक सफल व्यक्तित्व

# चम्बल के चन्दन

काव्य धारा

उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

कृति - एक सफल व्यक्तित्व
**''चम्बल के चंदन''** काव्य धारा

संपादन - श्रमण मुनि विज्ञसागर

प्रेरणा - श्रमणी आर्यिका विमलश्री

रचना - श्रमण मुनि विनुतसागर
श्रमणी आर्यिका विनेहश्री
श्रमणी आर्यिका विमुदश्री
बा.ब्र. श्रिया दीदी (प्राची)

पावन प्रसंग - दसवाँ आचार्य पदारोहण दिवस

प्रथम संस्करण - 2019

प्रतियाँ - 1000

प्रकाशन सहयोगी - श्रीमती सीतादेवी जैन, मालपुरा (अमरगढ़ वाले)
श्री घीसालाल जी जैन, गुलगांव, केकड़ी
श्री ललित जी श्रीमती बर्फी देवी जैन सपरिवार, भीलवाड़ा

प्राप्ति स्थान - ✻ धर्म प्रभावना ट्रस्ट न्यास भिंड (म.प्र.)
✻ विराग विद्या पीठ भिंड (म.प्र.)
✻ सीपुर समता तीर्थ धाम, सीपुर(राज.)
✻ देवेन्द्र कुमार जैन (प्लायवुड वाले) बड़ी बाजार, बीना (म.प्र.)

मुद्रक - ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर
मो. 8290526049, 8619727900





# भूमिका

जिस प्रकार अनगढ़ पाषाण को तराश कर एक कुशल कारीगर सुन्दर मूर्ति का रूप देता है उसी प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं को शब्द शिल्प में गढ़ना भी एक कला है। ऐतिहासिक घटनाएँ, वे भी कोई छोटी-मोटी नहीं ऐसी-ऐसी घटनाएँ जो जन मानस के लिए प्रेरणादायी ही नहीं कल्याणकारक हो, ऐसी ही कुछ घटनाओं को शब्द समूह में पिरोकर काव्य में प्रेषित करना और भी सबसे बड़ी कला है। जिनकी महिमा शास्त्रों में गाई है जिनकी महिमा बड़े-बड़े ऋषियों ने मुनियों ने विद्वानों ने गायी है जिनका ध्यान सर्वश्रेष्ठ कहा है कहते भी हैं-

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजा मूलं गुरोः पदम्,
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा

अगर ध्यान का मूल है तो गुरु की मूर्ति (आकृति) है क्योंकि एक वृक्ष होता है वृक्ष की जड़ें होती हैं। अगर जड़ न हो तो वृक्ष का अस्तित्व ही न रहे, इसी प्रकार ध्यान का मूल भी गुरुमूर्ति हुआ करता है और पूजा का मूल गुरु के चरण हैं और मंत्रों में यदि कुछ मूल है तो गुरु वाक्य है। शास्त्रों में कहा है- हजारों करोड़ों मंत्रों का जाप्य किया जाए। दूसरी ओर 'गुरु' इन दो अक्षरों के मंत्रों का जाप्य किया जाय। उनमें इन दो अक्षरों का मंत्र अधिक श्रेष्ठ है। अगर हमें

गुरु मुख से चार शब्द भी मिल जाए तो सम्पूर्ण द्वादशांग का सार प्राप्त हो जाता है।

कहा भी है गुरु की आज्ञा में, सब वेद समाये रे, गुरु चरणों की धूल...अर्थात् गुरु की आज्ञा में सम्पूर्ण द्वादशांग समाहित है। क्योंकि अक्षरों का प्रारम्भ 'अ' से होता है और अन्तिम अक्षर 'ज्ञ' होता है और अ से ज्ञ तक सारे अक्षर आ जाते हैं। अक्षरों का समूह ही श्रुत ज्ञान है। श्रुत ज्ञान ही द्वादशांग रूप है अतः आज्ञा शब्द में सम्पूर्ण ज्ञान समाया है। ऐसे गुरुओं का गुणगान काव्य के माध्यम से करना सबसे बड़ी कला है।

गुरु गुणगान कोई साधारण बात नहीं है। जब हमारे दिलों में गुरु भक्ति का गुबार उठता है एक तूफान उठता है एक भूचाल आता है तब वह भक्ति शब्द रूप ले लेती है और गुणगान हो जाया करता है। कोई काव्य लिखना चाहे तो शायद लिख नहीं सकता है, किन्तु जब कोई काव्य में डूब जाता है, तो वह स्वयमेव ही शब्द रूप में प्रकट होता है। वही कविता, वही गजल, वही छंद हो जाया करता है।

एक महाकवि का जीवन चरित्र कविता के माध्यम से कहना ये बहुत बड़ा साहस है। पूज्य गुरुदेव उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी गुरुदेव के जीवन की अद्भुत घटनाएँ इन काव्यों में गुंथित हैं।

अद्भुत घटनाएँ उन्हीं की हुआ करती हैं जो





दुनिया में अद्भुत हुआ करते हैं। अद्भुत वे ही होते हैं जो स्वकल्याण के साथ जन-जन के कल्याण की भावना भाते हैं। यद्यपि इस युग में तीर्थंकर नहीं है परन्तु उनके मार्ग का अनुसरण करने वाले आचार्य भगवन्तों का जीवन चरित्र भी अद्भुत हुआ करता है।

आचार्य गुरुदेव श्री विनम्रसागर जी जिन्हें उच्चारणाचार्य कहा जाता है। उच्चारणाचार्य का अर्थ है जो अपने जीवन में उच्च आचरण करते हैं। दूसरा अर्थ जिनका शब्द उच्चारण सर्वश्रेष्ठ हुआ करता है। उन्हें उच्चारणाचार्य कहा जाता है। श्रमणी आर्यिका 105 विमलश्री माताजी के प्रोत्साहन से भिण्ड नगर में जन्मे पूज्य श्री की बाल लीलाओं का उनकी प्रतिभा का उनकी लगनशीलता का जीवनोत्थान संयम यात्रा का संयमी सृजन, काव्य सृजन, ज्ञानार्जन का सम्पूर्ण वृत्तांत छत्तीस छत्तीस छन्दों के माध्यम से मुनिश्री विनुतसागर जी महाराज ने, आर्यिका विनेह श्री माताजी ने, आर्यिका विमुद श्री माताजी ने, बाल ब्रह्मचारिणी श्रिया दीदी (प्राची दीदी) ने काव्य के माध्यम से जनमानस के बीच प्रेषित करने का प्रयास किया है जिसके माध्यम से पूज्य गुरुदेव के जीवन प्रसंग जन-जन को प्रेरणादायी सिद्ध हो सकेंगे। गुरु भक्ति के माध्यम से हर आत्मा परमात्मा बनने की ओर अग्रसर हो सकेगा क्योंकि कहा भी है -

गुरु भक्ति संजमेण य तरंति संसार सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठ कम्मं जम्मं मरण ण पावेंति।

सही प्रकार अर्थात् सम्यक् प्रकार से की गई गुरु भक्ति घोर संसार सागर को पार कराने में कारण है और अष्ट कर्मों को नष्ट कर जन्म मरण समाप्त करने वाली है। इस प्रकार की गुरु भक्ति जिन्होंने की, आगे करेंगे अथवा प्रेरणा लेंगे वे निश्चित रूप से एक दिन परमात्म पद को अवश्य प्राप्त करेंगे। इन्हीं पवित्र भावनाओं के साथ यह छत्तीस-छत्तीस छन्द वाली काव्य धारा जिसमें गुरुदेव का मांगलिक जीवन चरित्र प्रस्फुटित हुआ है, अब एक पुस्तक का रूप लेने जा रहा है। वह पुस्तक जन-जन तक पहुँचे हर गुरु भक्त इसे पढ़कर अपने जीवन को श्रेयस्कर बनावे इन्हीं मंगल पुनीत भावनाओं के साथ (वीतराग शासन सदा जयवंत हो) त्रिषष्ठीगुणसहिताय नमो नमः।

- श्रमण मुनि विज्ञसागर





# *Message of Heart...*

Firstly I heartly thanks to my Preceptor P.P. Uchcharnacharya 108 Shri Vinamra Sagar Ji Gurudev. Who incressing the great talent of poetry writting in me I am one of the smallest petal so I don't have that much ability in me to say the short life story of "poetry emperor" but my heart says all the prayers, Psalmes & poetries are alibi but I have to do devotion to the Gurudev. I must thanks to Shraman Muni Shree 108 Vigya Sagar Ji, Vinut Sagar Ji and Sharmani Aryika 105 Vimal Shri Mataji, Vineh Shri, Vimud Shri Mataji they are help me to present the book of devotion on the great occasion of 10th Aacharya Padarohan divas we wish, we Pray God bless you live long stay happy and healthy and the next born you archive the Kaivalya Gyan and I am become the head disciple (gandhara) of your Samavasharan.

I bow to in your feet infinity times...
Namostu Bhagwan

I am Candle you are light,
I am eye and you are sight,
I am heart and beet you are,
O' my Guruvar bow to you.

Your Puny disciple
B.B. Shriya Didi (Prachi)

# गुरु का जीवन वृत्तांत

श्रमण मुनि विनुतसागर जी महाराज

धन्य है वो धरा जहाँ जन्म लिया,
माँ चमेली की गोद को धन्य किया।
भिण्ड की इस धरा को है पावन किया,
पाके तुमको ये भिण्ड नगर है खिला।।1।।

पहले वो भी यहाँ, आम इन्सान थे,
अपने अन्दर की शक्ति से अनजान थे।
जिनकी है ये कहानी वो खुद ज्ञान है,
ज्ञान तप के अहिंसा के भगवान हैं।।2।।

अश्विन शुक्ला त्रयोदश की थी वो घड़ी,
लेके अवतार जन्मे हो अद्भुत मणी।
कहते हैं लोग सब कैसा बालक हुआ,
छाया आनन्द जन-जन के दिल को छुआ।।3।।

माँ चमेली पिता मेरु के हो रतन,
तुमको पाके हुआ सारा जग ही चमन।
पालने में झुला माँ को ऐसा लगा,
मानो घर में ही उनके है सूरज उगा।।4।।

घर में पंडित बुला कुण्डली दी थमा,
कुण्डली देख पण्डित भी बोला यहाँ।





संत योग है इनका बड़ा ही प्रबल,
विश्व में होगा संत अनोखा धवल।।5।।

देखकर कुण्डली वो चकित हो गये,
ऐसे गुण देखकर सब प्रफुल्लित हुए।
देख पण्डित ने नाम रतन कह दिया,
नाम सुन के यहाँ माँ के मन भा गया।।6।।

अपने माँ बाप की गोद में थे पले,
मन में उच्च विचारों के बीज फले।
प्यार से सब यहाँ इनको पप्पू कहे,
लाड़ले बन जिये सबके दिल में रहे।।7।।

थे शुरू से ही मेधावी घर में बड़े,
दूसरी कक्षा से ही ये आगे बढ़े।।
गणित आंग्ल विषय था इन्हें बहुप्रिय,
पढ़ने में ये हमेशा से अव्वल रहे।।8।।

मन में साहस लिया अपना परिचय दिया,
देख कोए के मुख में जो चूहा दबा।
भाव मन में दया का उमड़ ही पड़ा,
प्रयत्न करके अभयदान फिर दे दिया।।9।।

इनके जीवन में फिर एक घटना घटी,
उम्र नौ साल थी मौत लेने अड़ी।
घूमने को वे बाजार जब थे गए,
एक बस के तभी ब्रैक फेल हुए।।10।।

ब्रैक फेल हुए संतुलन खो गया,
देखते-देखते जाने क्या हो गया।
बस ऊपर चढ़ी फिर भी कुछ ना हुआ,
देख लोगों को आश्चर्य उसी क्षण हुआ।।11।।

मौत भी क्या बिगाड़े भला संत का,
होना कल्याण था इनसे कई जीव का।
उम्र नौ वर्ष तक तीन आघात हुए,
पुण्य आये उदय यम भी वापस हुये।।12।।

जा बरासों किया अभिषेक प्रथम,
मंत्र बोले बड़े-बूढ़े आये शरम।
मंत्र याद किया प्रभु पे धारा दिया,
देख बालक को मन सबका हर्षित हुआ।।13।।

करके नियम को दृढ़ 8 दिन वो रहे,
रहके अभिषेक पूजन वो सीखा करे।
भिंड में लौट आ सबको पूजन सिखा,
सोते लोगों में आके ललक दी जगा।।14।।

रोज पूजन करे सबके मन को हरे,
किसी को हुयी खता तो भला क्या करे।
कोर्ट तक बात गयी जज भी देखन गया,
देख पूजन तुम्हारी मगन हो गया।।15।।

तीक्ष्ण बुद्धि से एम.कॉम. तुमने किया,
पूरे भिण्ड़ जिले में था टॉपर किया।





पूछने सब लगे मित्रगण मिल यहाँ,
कहते मुस्का के पूजन का फल है मिला।।16।।

बात इस बीच की कुछ ऐसी भी थी,
विराग सागर जी नगरी में आये तभी।
गुरु विराग का सान्निध्य ऐसा मिला,
उनके दर्शन से जीवन था इनका खिला।।17।।

घर के बाहर से गुरुवर जी मन्दिर चले,
देखे छत पे खड़े, सोच में वे पड़े।
बन मुनि जब यहाँ घूम सकते हैं ये,
क्या भला है कमी जो ना हम बन सके।।18।।

दर्शन करने को गुरुवर के मन्दिर गये,
दर्श पाके हुये मन में हर्षित बड़े।
देख गुरुवर की आँखों में ऐसा लगा,
अपनी नजरों में हमको बसा लो सदा।।19।।

स्वाध्याय प्रेमी गये मन में शंका लिये,
पूछ गुरुवर से हल उसका हर्षित हुये।
गुरु से होके सघन भूले घर बार धन,
लग्न ऐसी लगी रोज आने लगे।।20।।

बातों-बातों में ऐसी ये बाते हुयी,
गुरु से नजरें मिली और दिल बस गयी।
प्रेम इतना मिला घर में मन ना लगा,
अपने भावों को गुरुवर के पद में रखा।।21।।

आगे बढ़ना मुझे तुमसा बनना मुझे,
गुरु ने हँस के कहा पहले घर पूछ ले।
कहते रत्न यहाँ घर में क्या पूछना,
हमको लेना भला तुमको देना यहाँ।।22।।

कुछ समय बाद गुरु पद विहार करे,
छोड़ कर भिण्ड नगरी बरासों चले।
रत्न राजेन्द्र गुरु संघ लावन गये,
गुरु आग्रह किये ब्रह्मचर्य व्रत लिये।।23।।

लगते ही घर खबर दौड़ आये सभी,
डाल गाड़ी में उनको भगाये तभी।
रोकने सब चले पर वे दृढ़ता लिये,
श्रेयांसगिरी में गुरुवर से फिर आ मिले।।24।।

साथ गुरुवर के बालक ये बढ़ता गया,
थाम ऊँगली गुरु की वो चढ़ता गया।
मन में वैराग्य की एक लहर छा गयी,
देख लोगों के मन में उदासी हुयी।।25।।

मुख ऐसा मुड़ा नाता फिर ना जुड़ा,
गुरु संग था खड़ा उनके पद जा पड़ा।
धर्म के ज्ञान की त्याग तप दान की,
गुरु मुख से मिली ध्यान रूपी मणी।।26।।

द्रोण-गिरी में किया गुरु ने उपकार था,
अपने कर से यहाँ ऐलक पद था दिया।





ऐलक दीक्षा को ले गुरु संग थे चले,
विनम्र ऐसे बने गुरु के मन भा गये।।27।।

विद्वानों में था जिकर प्रज्ञा इनकी प्रखर,
वाणी ऐसी मधुर कवियों के है विदुर।
बात गुरु ने सुनी गर्व आया तभी,
जान धर्म प्रभावक अलग कर दिया।।28।।

हुआ सागर में चौमासा गुरु आपका,
पूजा भक्तामर का शिविर जब लगा।
भीड़ न थी बनी धूम ऐसी मची,
जब प्रभु को बिठा दिया पुष्प घुमा।।39।।

गुरु की हुयी कृपा पद दिगम्बर मिला,
ललितपुर की धरा को है सूरज मिला।
सबकी किस्मत से सबका है भाग्य खिला,
विनम्र सागर का सान्निध्य सबको मिला।।30।।

जैसे एक पेड़ की छाया सबको मिले,
वैसे ही आज हमारे हैं पुण्य खिले।
बाँसवाड़ा में गुरु का हुआ जब मिलन,
आचार्य पद दे दिया गुरु ने होके सघन।।31।।

दया करुणा से कितना भरा इनका मन,
साधु जैसा है मन और दिगम्बर है तन।
उनकी शिक्षा का हम सब करे आचरण,
सच की राह चुने गुरु को करके नमन।।32।।

शब्द विज्ञान के गुरु आप धनी,
जाने कितनी गजल कविताएँ रची।
बूँद पानी की जीवन है अक्षय कृति,
प्रत्येक जन के हृदय में ये गूँज उठी।।33।।

वीर की शान हो धर्म की आन हो,
सच की पहचान हो ज्ञान की खान हो।
चारों अनुयोगों के तुम हो ज्ञाता गुरु,
न्याय सिद्धान्त के प्रखर वक्ता गुरु।।34।।

दसवें सूरि पदारोह पर है नमन,
है नमन है नमन दो चरण की शरण।
आप जयवंत हो इस जहाँ में सदा,
चाँद तारे जहाँ मैं हैं जब तक सदा।।35।।

लिख रहा मैं विनुत गुरु की जीवन कथा,
शब्द का ज्ञान कम मुझको देना क्षमा
पाने को आचरण, आपका मैं गुरु,
कर रहा हूँ चरण, मैं विनम्र नमन।।36।।

।।इति।।





# उच्चारणाचार्य विनम्रसागर जी की जीवन गाथा

श्रमणी आर्यिका विनेहश्री माताजी

तर्ज-जीवन है पानी की बूँद...

भिण्ड नगर के गौरव की हम कथा सुनाये रे-
सुनकर सब भविजन हो-हो-2 हर्षित हो जाये रे-

माँ ने सपने देखे जब रतन गर्भ में आये तब-2
पिता (जनक) प्रसन्न हुये थे तब-2
गर्भ समय संस्कार दिए, दया धर्म के बीज दिये-2
सूरज सा बालक हो हो-2 आँगन चमकाये रे -

शुभ बेला में जन्म हुआ, घर-आँगन खुशहाल हुआ-2
परिजनों को हर्ष हुआ-2
मात-चमेली धन्य किया, मेरचन्द प्रसन्न किया-2
भिण्ड नगर में हो हो-2 उत्सव ये छाया रे

मात-चमेली तारे थे, मेरचन्द के प्यारे थे-2
जन-जन राजदुलारे थे-2
नटखट चंचल बालक थे, सबके मन को भाते थे-2
सबको खुश करते हो-हो-2, अपनी लीलाओं से

कुंडली देखके हर्षित हो-भविष्य में बालक मुनिवर हो-2
नाम रतनस्वरूपी हो-2
भिण्ड नगर का गौरव हो, गुरु से जीवन उन्नत हो
जन-जन के प्यारे-हो-हो-2 'नवरत्न' कहाये रे-ऽऽऽ

विद्यालय में जाते थे, गुरु चरणों को छूते थे-2
तीक्ष्ण बुद्धि दिखलाते थे-2
सब मित्रों में अव्वल थे, सबको शिक्षा देते थे-2
ऐसे ही बच्चे हो-हो-2 गौरववान् कहाये रे-ऽऽऽ

नव वर्ष के बालक जब, दुर्घटना में ग्रसित तब-2
पुण्य उदय भी आया तब-2
बालक बस के नीचे था, मार न कोई पाया था-2
मुक्ति पथ जाये हो-हो-2 उनसे मृत्यु भी हारे रे-

पर्यूषण पर्व आये थे, जन जन के मन भाये थे-2
धर्माचरण कराये थे-2
अनंत चतुर्दशी आयी थी, व्रत करने की समायी थी
माँ ने मनाया हो-हो-2 पर एक न मानी रे-

भूखा 'पप्पू' सोया था, पेट दर्द से रोया था-2
माँ ने तब सहलाया था-2
भूख प्यास से घबराया, फिर उसको सह न पाया
रात्रि में उठकर हो-हो-2 दाल उर्द की खायी रे
(रसगुल्ला उड़ाएँ रे)





कबड्डी क्रिकेट खेले थे, अन्य खेल भी खेले थे-2
सब मित्रों में बढ़ के थे-2
खेल-खेल में बड़े हुए, बढ़े हुए तब खड़े हुए
खेलों को खेले हो-हो-2 और आनंद बढ़ाएँ रे-

एम.कॉम. तक शिक्षा थी, डिस्ट्रिक टॉप भी इनकी थी-2
प्रज्ञा, बुद्धि प्रतिभा थी-2
बच्चों को ये पढ़ाते थे, फीस कभी न लेते थे-2
शिक्षा को पाकर हो-हो-2 शिक्षक कहलाये रे

अध्यापन का कार्य किया, विद्यालय में नाम किया-2
सदाचार का ज्ञान दिया-2
नयी-नयी ये खोज करें, नये-नये ये काम करे-2
आठ वर्षों तक हो-हो-2 शिक्षक पद को सजाये रे-

जैन शास्त्र का पठन किया, रात्रि भोजन त्याग दिया-2
जमीकंद भी त्याग दिया-2
प्रभू पूजन नित करते थे, मधुर कंठ से गाते थे-2
मित्रों को पूजन-ऽऽ ये रोज कराये रे-

भिंड नगर गुरु आये थे, विराग दर्श को पाये थे-2
दिल को गुरुवर भाये थे-2
घर में मन नहीं लगता था, गुरु दर अच्छा लगता था-2
वैरागी मन को हो-हो-2 कोई जान न पाये रे-

विवाह योग्य जब रतन हुआ, शादी का प्रस्ताव हुआ-2
फँसने का न भाव हुआ-2
परिजनों ने समझाया, रतन बात में न आया-2
गुरु के दर जाना हो-हो-2 जीवन सफल बनाना रे-

लड़की वाले आये जब, श्वांग रचाया इनने तब-2
साइकिल सुधारी इनने तब-2
मुनि बनकर ये बैठ गये, लड़की वाले लौट गये
कामयाबी पाके हो-हो-2 हर्षित हो जाये रे-

रिश्ते नाते झूठे हैं, राग-द्वेष के खूटे हैं-2
गुरुवर बड़े अनूठे हैं-2
गुरु की शरण में रहना है, आतम कुंदन करना है-2
मरण समाधि हो-हो-2 का भाव बनाये रे

गुरु को दिल में बिठा लिया, चरणों में सर झुका लिया-2
गुरु ने जलता दीप दिया-2
माता-पिता गुरु भ्राता है, रत्नत्रय के दाता है-2
गुरु की मूरत में हो-हो-2 भगवन नजराये रे-

घर से मुख को मोड़ा था, राग से नाता तोड़ा था-2
धर्म से नाता जोड़ा था-2
मात पिता को छोड़ दिया, पर से रिश्ता तोड़ लिया-2
रोये सब परिजन हो-हो-2 पर एक न मानी रे-





विराग गुरु आशीष दिया, ब्रह्मचर्य रसपान किया-2
दस प्रतिमा को धार लिया-2
गुरु विराग के साथ चले भिंड नगर को छोड़ चले
गुरुवर की सज़्दा हो-हो-2 शुभ राह दिखाये रे-

द्रोण गिरि पर चरण पड़े, सिद्ध क्षेत्र के दर्श किये-2
दीक्षा को तैयार हुए-2
ऐलक, दीक्षा धार रहे, विनम्र नाम को पाय रहे-2
गुरु के चरणों में हो-हो-2 भव सफल बनाया रे

गुरुवर मुझे पढ़ाओ तुम, ज्ञानी मुझे बनाओ तुम
अनुशासन सिखलाओ तुम-2
बन जाएँ हम शिष्य सुगम, हो जाएँ सब कर्म खतम
गुरुवर की छाया हो-हो-2 भव भ्रमण मिटाएँ रे

आगम का तब ज्ञान किया, अध्यात्म का रसपान किया-2
नय-प्रमाण को जान लिया-2
सही ज्ञान ईजाद किया, दिल से उसको मान लिया-2
गुरु के चरणों में हो-हो-2 सम्यक् शिक्षा पायी रे

सरल स्वभावी गुरुवर है, मृदुभाषी ये गुरुवर है-2
ज्ञानी और विवेकी है-2
प्रभु ध्यान ये करते हैं, गुरु जाप ये करते हैं-2
गुरुवर की महिमा हो-हो-2 ये रोज सुनाये रे-

महाकवि कहलाते हैं, सुंदर भजन बनाते हैं-2
मधुर कंठ से गाते हैं-2
गज़ल कविता लिखते हैं, भक्त सभी ये सुनते हैं-2
हर्षित सब होते हो-हो-2 गुरुवर की वाणी से

शिविर लगाते भक्तामर, शुद्ध कराते सबके स्वर-2
जिनका है उच्चार प्रखर-2
मंत्र जाप फल बतलाते, जीवन जीना सिखलाते-2
भक्तामर की महिमा हो-हो-2 गुरु विनम्र बताये रे-

अजर अमर अविनाशी है, सर्व विघ्न विनाशी है-2
ऋद्धि सिद्धि प्रदायी है-2
द्वादश पद्यानुवाद किये, आदिप्रभु गुणगान किए-2
भक्तों के प्यारे, हो-हो-2 गुरु विनम्र कहाये रे-

पूजन शिविर लगाते हैं, प्रभु भक्ति सिखलाते हैं-2
प्रभु से मिलन कराते हैं-2
मधुर कंठ से गाते हैं, सब आनंदित हो जाते हैं-2
पूजन प्रणेता हो-हो-2 गुरुवर कहलाये रे-

जहाँ-जहाँ पर कदम बढ़े, वहाँ बहुत से फूल खिले-2
संयम के उपहार बने-2
धर्म प्रभावना खूब वही, विनम् गुरु की ज्योति जली-2
ऐसे ही गुरुवर हो-हो-2 नित ज्ञान बढ़ाए रे-





पुत्र देख वैराग्य हुआ, मेरचन्द्र को ज्ञान हुआ-2
मुनि दीक्षा का भान हुआ-2
विराग गुरु के पास गये, द्रोण गिरि में मुनि बने-2
विश्वकीर्ति मुनिवर हो-हो-2को सब शीश झुकाओ रे

पिता-पुत्र जब साथ चले, बीना चातुर्मास करे-2
मुनिवर तब अस्वस्थ भये-2
निर्यापक का कार्य किया, सम्बोधन भी खूब किया
अंत समय में हो-हो-2 श्रेष्ठ समाधि करायी रे

गुरुवर का संयोग हुआ, मुनि दीक्षा का भाव हुआ-2
गुरुवर का आशीष हुआ-2
ललितनगर में मुनि बने, विराग गुरु के दीप बने-2
जन-जन हषाये हो-हो-2 मुनिवर को पाकर रे

गुरु विराग से योग्य बने, उनके पद अनुसरण करे-2
बाँसवाड़ा में सूरि बने-2
श्रमण संघ विस्तार किया, भव्यों का उद्धार किया-2
गुरु बिन न जग में हो-हो-2 भव पार कराये रे-

सूरि बने गिरनार चले, सिद्ध क्षेत्र विहार करें-2
धर्म प्रभावना खूब करें-2
भक्त अनेकों साथ चले, नेमि प्रभु का ध्यान करें-2
ऐसे गुरुवर को हो-हो-2 सब शीश झुकाओ रे-

बाँसवाड़ा में वर्षायोग, फिर बनता दीक्षा का योग-2
त्रय दीक्षा का था संयोग-2
प्रतिष्ठाचार मुनि बने, विज्ञसागर जी नाम मिले-2
विनम्र गुरु के हो-हो-2 पहले शिष्य कहाये रे

बाँसवाड़ा भू धन्य हुई, पंच आर्यिका दीक्षा हुई-2
व द्वय दीक्षा व समाधि हुई-2
सम्मेद शिखर विहार किया, श्रमणों को भी साथ लिया-2
चालो-चालो सब हो-हो-2 सम्मेद शिखर जी रे-

दस धर्मों का पान करे, बारह तप का ध्यान करें-2
पंचाचार का ज्ञान वरे-2
षट् आवश्यक रोज करें, त्रय गुप्ति का वरण करें-2
ऐसे सूरि को हो-हो-2 नित शीश झुकाओ रे-

गुरुवर का अभिनंदन हो, चरणों में नित वंदन हो-2
देख इन्हें दिल हर्षित हो-2
गुरु ब्रह्मा, गुरु शंकर है, गुरुवर ही तीर्थंकर है-2
ऐसे गुरुवर का हो-हो-2 आचार्य दिवस मनाएँ रे-

जय हो- जय हो जय गुरुवर, पाओ गुरु तुम लोक शिखर-2
पाकर दर्शन ज्ञान प्रखर-2
छूटे सब संसार दुखी, होवे गुरु चिरकाल सुखी-2
विनेह श्री चरणों में हो-हो-2 नित शीश झुकाये रे-

***





# श्री विनम्र छत्तीसी

श्रमणी आर्यिका विनेहश्री माताजी

गुरु ब्रह्मा गुरु देव है गुरुवर दयानिधान।
इनको पाकर धन्य हुआ भारत देश महान्।।
रत्नत्रय के हैं धनी गुण रत्नों की खान।
गुरु विनम्र के द्वय चरण शत-शत वार प्रणाम।।

गुरु विनम्र की जय-जय होवे, धर्म बीज हृदय में बोवे।।1।।
भिण्ड शहर है अति सुखकारी, महिमा इनकी है अति प्यारी।।2।।
1 अक्टूबर का दिन प्यारा, जन्म लिया धरती पर न्यारा।।3।।
मेरचन्द्र के राजदुलारे, चमेली माँ के आँख के तारे।।4।।
काम विषय सेवन दुखकारा, जिनसे तीन लोक भी हारा।।5।।
ब्रह्मचर्य बचपन में धारा जिससे तन में तेज अपारा।।6।।
बने थे ऐलक द्रोणगिरी में, हुआ था मंगल सिद्धक्षेत्र में।।7।।
गुरु विराग से पायी दीक्षा, संस्कार की दी थी शिक्षा।।8।।
विनम्रसागर नाम को पाया, विनम्रता को भी दिखलाया।।9।।
प्रखर बुद्धि को भी है पाया, अद्‌भुत ज्ञान हृदय सजाया।।10।।
भक्तामर का शिविर लगाया, उच्चारणाचार्य पद को पाया।।11।।
'भक्तामर' बाबा कहलाये, जन-जन के मानस को भाये।।12।।
सम्यक् पूजा विधि सिखलायी, मधुर कंठ से इनने गायी।।13।।
पूजन करना सिखलाते हैं, भक्तों के मन को भाते हैं।।14।।
मुक्तक शेर व गजल बनाते, गीत, कविता, भजन को गाते।।15।।
जीवन है पानी की बूँद ये, गुरुवर जी सबको समझाते।।16।।

इंग्लिश में नवकार को गाया, स्तुति, भजनों को भी गाया।।17।।
इंग्लिश में टीकाएँ लिखते, ऐसे गुरु को वंदन करते।।18।।
8 जून का शुभ दिन आया, ललित नगर में आनंद छाया।।19।।
मुनि बनकर कल्याण किया है, स्व पर का भी ज्ञान किया है।।20।।
आगम का ये ज्ञान कराते, नय, न्याय को भी समझाते।।21।।
अध्यात्म जगत् का पान कराते, मधुर वाणी से सबको भाते।।22।।
बाँसवाड़ा में हुए सूरिवर, ये ही हम सबके हैं गुरुवर।।23।।
छत्तिस गुण को धारण करते, रत्नत्रय को हिय में धरते।।24।।
दश धर्मों का बाना पहना, बारह तप हैं जिनका गहना।।25।।
पंचाचार करे जो पालन, तीन गुप्ति जिनको मन भावन।।26।।
षट् आवश्यक रोज ये करते, शिष्यों से पालन करवाते।।27।।
हम सबके आचार्य कहाते, ऐसे गुरु को शीश झुकाते।।28।।
भव्य शिष्य मन निर्मल लाये, दीक्षा दे शिवमार्ग लगाये।।29।।
बाल वृद्ध को शिष्य बनाते, ज्ञान, ध्यान के सूत्र बताते।।30।।
वात्सल्य की अनुपम धारा, जीवन में बहती रसधारा।।31।।
गुरुवर जी को हृदय में बिठाते, चरणों मे नित शीश झुकाते।।32।।
श्रमण रत्न रत्नाकर हैं ये उत्तम चारित्र साधक हैं ये।।33।।
कवियों में ये महाकवि हैं, गुरु विराग की अमिट छवि हैं।।34।।
श्रेष्ठ समाधि तुम करवाते, भव्य जनों को पार लगाते।।35।।
यही भावना हम भक्तों की, जय हो, जय हो, गुरु विनम्र की।।36।।

गुरु चरणों में नित रहूँ, देना शुभ आशीष ।
गुरु विनम्र के द्वय चरण, सदा झुकाऊँ शीश ।।
भूल चूक सब माफ हो, क्षमा करो ऋषिराज।
ऐसा दो आशीष अब, रहे तुम्हारे पास ।।





# गुरुवर की जीवन गाथा

**श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माताजी**

म तो जीवन गाथा गाऊँ, गुरु थारे नाम री-2,
म तो करूँ ला भक्ति, गुरु थारे नाम री,
गाऊँ-2, रे...2, गुणगान, गुरु थारे नाम रे...
म तो जीवन........

उस धरा को माथ नवाऊँ, जहाँ गुरुवर ने जन्म लिया,
उस धरा की पूजा रचाऊँ, जहाँ रत्नमय फूल खिला,
पुत्र-पुत्र रे...2, पिता, मेरचन्द जी का-2
म तो जीवन........

रात म जब सपना देख्या, तब माँ ऐसी चौक पड़ी,
सुबह होते ही मेरचन्द जी से, स्वप्न का फल वो पूछ पड़ी,
सुन-सुन रे...2, चमेली माँ, स्वप्न का फल-2
म तो जीवन........

अद्भुत बालक गर्भ में थारे, जल्दी आने वाला है,
तैजस्वी और बलशाली वह, आंगन का उजियारा है,
फल सुन रे...2, हर्षी, मात चमेली-2
म तो जीवन........

जब बालक का जन्म हुआ तब, आँगन म खुशियाँ छायी,
घर आँगन म हुई बधईयाँ, चारों दिशाऐं महकायी,
आयो-आयो रे...2, वीरा सो, रूप धरके-2
म तो जीवन........

धन्य घड़ी जीवन की आई, शुभ मुहूर्त में जन्म लिया,
पिता मेरचन्द झूम उठे, जब पुत्र का मुखड़ा देख लिया,
देख्यो-देख्यो रे...2, सलोनो मुख, मेरचन्द ने-2
म तो जीवन........

पिता मेरचन्द जी ने इक दिन, पंडित को घर बुलवाया,
कुण्डली नक्षत्रों को देखकर, पंडित का मन हर्षाया,
देखे-देखे रे...2, अनोखे लक्षण, बालक के-2
म तो जीवन........

रत्नस्वरुप नाम रखा था, शुभ लक्षण जब देखे थे,
घर में मात-पिता सब उसको, पप्पू-पप्पू कहते थे,
करते-करते रे...2, लाड़-प्यार, बालक को-2
म तो जीवन........

पप्पू जब आँगन में चहके तो, मात-पिता सब हर्षाये,
पप्पू के संग भाई-बहन भी, आंगन में सब इठलाये,
हर्षे-हर्षेरे...2, मात-पिता, सब हर्षेरे...2
म तो जीवन........

भाई-बहन के संग-संग पप्पू, सब्जी लेने जाते हैं,
वहाँ अचानक बस के नीचे, पप्पू जी आ जाते हैं,
हुआ-हुआ रे...2, अचंभा, ऐसा दृश्य देख के-2
म तो जीवन........





कुछ भी नहीं हुआ बालक को, यह अतिशयकारी घटना,
बड़ा पुण्य का उदय था उसका, जो खरोच भी आयी ना,
बड़ा-बड़ा ही...2, पुण्यवान, बालक देखो-2
म तो जीवन........

जब वो थोड़ा बड़ा हुआ तो, बालक अजब निराला था,
पंडित मेरचन्द ने उसको, संस्कारों से पाला था,
धीरे-धीरे-2, वो खिल उठा, संस्कार से-2
म तो जीवन........

एक दिन अनंत चतुर्दशी को, व्रत करने का ठान लिया,
पूरा दिन भूखा-प्यासा रह, रात भुख ने तड़पाया,
पीली-पीली रे...2, उड़द की दाल, चुपके-चुपके-2
म तो जीवन........

जब भी वे पढ़ने जाते तो, गुरु चरणों को छुते थे,
गुरुवर के आशीष से वह, कक्षा में आगे रहते थे,
गुरु - आशीष से...2, बुद्धि प्रखर हुई-2
म तो जीवन........

एम.कॉम. शिक्षा पाकर के, भिण्ड नगर का नाम किया,
जैन समाज में सबसे पहले, इनने ऐसा काम किया,
पायो-पायो रे...2, गोल्ड मेडल, सबसे पहले-2
म तो जीवन........

अपनी योग्यताओं के कारण, प्रोफेसर पद प्राप्त किया,
आठ वर्ष तक शिक्षक रहकर, गणित विषय का ज्ञान दिया,
प्यारे-प्यारे थे...2, गुरु जी, सब बच्चों के-2
म तो जीवन........

अध्यापन के साथ-साथ, आगम अध्ययन वो करते थे,
सामायिक में मुनिकर वे, ध्यान अनुपम करते थे,
करते-करते थे...2, वे आत्मा का, ध्यान अनुपम-2
म तो जीवन........

गुरुवर विरागसागर इक दिन, भिण्ड नगर में आए थे,
मेरचन्द परिवार सहित तब, दर्शन करने आए थे,
गुरुवर दर्शन...2, किया तब, नवरत्न ने-2
म तो जीवन........

पिता श्री ने गुरुवर को, नवरत्न का परिचय करवाया,
शिक्षा और ज्ञान के बारे, में भी उनको बतलाया,
देखा-देखा रे...2, सलोना लेख, गुरुवर ने-2
म तो जीवन........

सुन्दर लेख देखके गुरु ने, व्यक्तित्व उनका जान लिया,
लेखन कार्य कराया उनसे, उनका मानस जान लिया,
जुड़ा-जुड़ा रे...2, अंतस् का तार, होले-होले-2
म तो जीवन........





गुरुदेव के वातसल्य ने, रत्न का मन मोह लिया,
मन ही मन में रत्न ने, मन को वैरागी बना लिया,
धीरे-धीरे... हो-2, वैराग्य दृढ़, होने लगा-2
म तो जीवन........

एक दिन युगल मुनिराजों का, पड़गाहन करवाया था,
कर पात्र में आहार करूँगा, मन में भाव जगाया था,
आहार-2.......2, कराके वे, खुश हो रहे-2
म तो जीवन........

शादी के रिश्ते आये पर, उनने सारे ठुकराये
परिजन-पुरजन सब मिलकर, उनको समझाने आये,
नहीं-नहीं...2, मुझे, शादी अब, नहीं करनी-2
म तो जीवन........

युवा मुनि श्री विरागसागर, घर के बाहर निकले थे,
देखके छत से युवा मुनि को, उठने प्रश्न लगे थे,
क्या मैं भी....2, इन जैसा, बन जाऊँ-2
म तो जीवन........

संयम का जब भाव जगा तो, गुरु चरणों में पहुँच गये,
अपने जैसा मुझे बना दो, चरणों में है अरज किये,
रख लो-2 जी...2, गुरुवर जी, अपने चरणा म
म तो जीवन........

सन् उन्नीस सौ बानवे को, नौ अगस्त था दिन वो प्यारा,
गुरुवर विराग के चिराग ने, दीक्षा ले तप को धारा,
धारी-धारी रे...2, ऐलक दीक्षा, धारी रे...2
म तो जीवन........

लघुता नवरत्न की देख के, गुरु विराग ने नाम रखा,
विनम्रसागर नाम रखा था, गुरुवर ने प्यारा-प्यारा,
जैसा काम देखा... हो-2, नाम दिया, गुरुजी ने-2
म तो जीवन........

देख योग्यता गुरुदेव ने, अलग चौमासा करवाया,
पूजन भक्तामर महिमा को, घर-घर में है बिखराया,
शिविर - 2.... हो - 2, प्रणेता, कहलाये-2
म तो जीवन........

सन् दो हजार तीन था, आठ जून का दिन प्यारा,
नगर ललितपुर में मुनि दीक्षा, मनहारी उत्सव न्यारा,
उत्सव-उत्सव... हो-2, था वो, बड़ा मनहारी-2
म तो जीवन........

भक्तामर बाबा कहावे, जब-2 शिविर लगावे वे,
जब-जब पूजन शिविर लगावे, पूजन सम्राट कहावे वे,
भक्ति-भक्ति... हो-2, वे खूब, करावे है-2
म तो जीवन........





बांसवाड़ा की पावन भू पर, गुरु विराग से मिलन हुआ,
19 दिसम्बर दो हजार दस को, सूरि पद संस्कार हुआ,
पाया-पाया रे...2, आचार्य पद, बड़ा भारी-2
म तो जीवन........

बांसवाड़ा नगरी में गुरु ने, मुनि दीक्षा पहले दी थी,
बाद में फिर इसी नगर में, आर्यिका दीक्षाऐं दी थी,
दे दी-2 रे...2, मुनि व आर्यिका, दीक्षा...2
म तो जीवन........

एक-एक शब्दों का गुरुवर, शुद्ध उच्चारण करते है,
शिष्यों को भी शुद्ध-शुद्ध, पढ़ना-लिखना सिखलाते हैं,
शुद्ध-शुद्ध से...2, उच्चारणाचार्य, कहलाते-2
म तो जीवन........

अंग्रेजी, प्राकृत, उर्दू और संस्कृत के गुरु जी ज्ञाता,
कविता, मुक्तक, गजल, भजन से, गुरुवर का अनुपम नाता,
गाते-गाते रे...2, कविता गजल, गुरुवर जी...2
म तो जीवन........

जीवन है पानी की बूँद के, कई हजार छंद लिख डाले,
कई गजल, मुक्तक व भजन, गुरुवर जी ने रच डाले,
कहते-कहते रे-2, गुरु जी को, काव्य सम्राट-2
म तो जीवन........

छोटे-छोटे शिष्य गुरु के, सबके मन को हर्षाते,
मुनि-आर्यिका, ऐलक-क्षुल्लक, दीदी-भैया हर्षाते,
हर्षे-हर्षेरे...2, गुरु जी, सबको देखकर के-2
म तो जीवन........

बाल-वृद्ध और युवा जनों को, गुरुवर का वात्सल्य मिला,
पिला-पिलाकर जिनवाणी रस, मुक्ति पथ पर लगा दिया,
करते-करते है...2, भक्तों को, भवपार गुरुवर-2
म तो जीवन........

आचार्य पदारोहण गुरु का, चरणों में वंदन करते है,
आप सदा जयवन्त रहो, हम यही कामना करते है,
युग-युग तक...2, चिरायु रहों, गुरुवर जी-2
म तो जीवन........

कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ, ओजस्वी वक्ता है गुरुवर,
कोटि-कोटि नमन है म्हारो, चरणा म वंदन गुरुवर,
चरणा-चरणा म...2, वंदन, विमुद श्री का-2
म तो जीवन........

***





### श्रेयगाथा

# रत्नस्वरुप के रत्नत्रयधारी

**बा.ब्र. श्रिया दीदी**

उस भूमि की करूँ वन्दना, जहाँ गुरुवर ने जन्म लिया,
उस भूमि की करूँ अर्चना, जहाँ नन्हा-सा फूल खिला।
उस रज की मैं करूँ वन्दना, जिसको चन्दन कर डाला,
गुरु चरणों अभिनन्दन करती, कहती हूँ जीवनगाथा ।।1।।

दसों दिशाएँ पावन हो गयीं, सृष्टि सारी ही झूम उठी,
गर्भ में आ गुरुवर जी पधारे, मन ही मन माता हर्षी।
माँ को देख ये लगता था, कि वीर प्रभु ही आये हैं,
पिता मेरचन्द जी भी देखो, मन ही मन मुस्काये हैं।।2।।

एक अक्टूबर सन् उन्नीस सौ, त्रेसठ का दिन धन्य हुआ,
भिण्ड की पावन वसुन्धरा पर, बालक का शुभ जन्म हुआ।
शुभ लक्षण से भूषित तन को, देख के नयना धन्य हुए,
बालक की उस दिव्य छवि को, लख के नयना धन्य हुए।।3।।

शुभ दिन शुभ मुहूर्त में देखो, बालक का शुभ जन्म हुआ,
सब अशुभ हर शुभकर्ता का, धरती पर अवतरण हुआ।
नन्हे-नन्हे पग बालक के, जब घर आँगन पर पड़ते,
मात चमेली निरख लला को, मन ही मन जाए हर्षे।।4।।

जब पण्डित जी घर आये तो, देख कुण्डली चकित हुए।
ऐसे गुण नक्षत्र तो हमने, कभी न देखे ना ही सुने।
कुल का नाम बढ़ायेगा ये, कुलदीपक इसे कहते हैं,
गुणरत्नों की खान बनेगा, "रत्नस्वरूप" ही कहते हैं ।।5।।

रत्नों में सर्वोत्कृष्ट, 'नवरत्न' भी उसको नाम दिया,
रत्नों का स्वरूप जानेगा, ऐसा शुभ आशीष दिया।
सब जीवों की नेत्र का भूषण, माता तेरा लाला ये,
सबका मार्ग प्रकाशक करने, वाला होगा लाला ये ।।6।।

बालक की लीलाएँ लखकर, सबका मन हर्षित होता,
नन्हा-सा पप्पू प्यारा ये, सबके मन को मोह लेता।
पिता मेरचन्द्र जी ने इनको, संस्कारों से पाला है,
मात चमेली का ये लाला, देखो अजब निराला है ।।7।।

नन्हे से बालक को एक दिन, उपसर्गों ने आ घेरा,
बस के नीचे आया बालक, सब लोगों का दिल देहला।
हुआ अचम्भा सबको आखिर, हुई ये क्या अनहोनी है,
बाल्य-अवस्था में ये कैसी, हुई यहाँ अनहोनी है।।8।।

बस के नीचे निकला बालक, देख सभी जन चकित हुए,
मुस्काते देखा जब उसको, सब विस्मय से ग्रसित हुए।
ऐसा लगा देखकर उसको, वीर बचाने को आये हों,
अपने पुत्र को जैसे स्वयं, गोदी में उठाने को आये हों ।।9।।





नन्हा पप्पू खेल रहा था, अपने सहपाठी के साथ,
देख उसे यमराजा बोले, ले जाऊँगा मैं इस बार।
एक शराबी ने तब नन्हें, बालक पर आघात किया,
भूमि पर गिर पड़ा वो बालक, रक्तमयी हो गयी धरा ।।10।।

रंगों के उस शुभ त्यौहार पर, रक्तवर्ण हुई ये पृथ्वी,
रुक गयी चंचल समय की धरा, थम गयी ये सारी धरती।
थम गया चंबल का नीर ये, बालक पर विपदा आयी,
पुण्य साथ था बालक का जो, विपदा टलती ही पायी।।11।।

चंचल बचपन बीत गया, अब युवावस्था की बारी,
मात पिता के संस्कारों की, जीवन में थी फुलवारी।
लौकिक शिक्षा में आगे हो, अध्ययन को मन सौंप दिया,
ग्रेजुएशन का फिर देखो, अपने मन में संकल्प किया ।।12।।

ग्रेजुएशन फिर पोस्ट ग्रेजुएशन, में डिस्ट्रिक टॉप किया,
पूजन अभिषेक का देखो, कैसा अनुपम फल ये मिला।
स्वर्ण पदक सम्मान हुआ और, जन-जन का मन हर्षया,
सबसे पहले नाम भिण्ड का, पप्पू जी ने चमकाया ।।13।।

बहुमुखी योग्यताओं से, प्राध्यापक पद से युक्त हुए,
लौकिक और अलौकिक के भी, छात्रों को हैं सूत्र दिए।
नये-नये चिंतन पैदा कर, बच्चों को ये पढ़ाते थे,
बच्चों के प्यारे टीचर जी, न्याय नीति सिखलाते थे ।।14।।

धार्मिक परिवेश में पले थे, संस्कारों में ढले हुए,
संस्कार बार-बार आकर के, रोज प्रहार करें।
अध्यापन के साथ-साथ, शास्त्रों का ये अध्ययन करें,
हृदयांगम करने को उसे, बनके ध्यान नित करते।।15।।

आयी मंगल बेला तो जब, पूर्व पुण्य का उदय हुआ,
शुभ दिन मंगल घड़ियों में, गुरु विराग का आगमन हुआ।
गुरुवर के आ जाने से ही, चमन हुई चम्बल धरती,
वर्तमान में वर्धमान को देख, सभी जनता हर्षी ।।16।।

पूज्य पिताजी ने पप्पू को, गुरु के दर्शन करवाये,
गुरुवर के दर्शन कर पप्पू, जी मन ही मन हर्षाये।
पण्डित जी ने गुरुवर से, बालक का परिचय करवाया,
सारी न्यारी प्रतिभाओं को, एक-एक कर बतलाया ।।17।।

मोती से अक्षर लिखते थे, गुरुवर के मन भाते थे,
गुरुवर अपनी डायरियाँ दे, लेखन कार्य कराते थे।
गुरुवर के साथ रोज, आहार निहार को जाते थे,
मन ही मन में पप्पू जी, वैरागी स्वप्न सजाते थे ।।18।।

प्रोफेसर की शादी को, माता ने सपने देखे थे,
शादी के रिश्ते भी देखो, रोज-रोज फिर आते थे।
थककर नवरत्नजी ने फिर, एक अनोखा काम किया,
साइकिल ठीक लगे जब करने, कालिक से तन मलिन किया।।19।।





लड़की वाले भाग गये तब, मन ही मन में हर्ष हुआ,
लावन ग्राम में जाकर के, गुरुवर से सुव्रत धार लिया।
पिता मेरचन्द जी का राग, निज बेटे पर उमड़ पड़ा,
क्षेत्र बरासों से ले आये, मोह की थी विचित्र दशा।।20।।

वैरागी मन गुरुवर का, वैराग्यमयी वो चर्या थी,
राग पे भारी पड़ने वाली, साधक जैसी चर्या थी।
अष्टमी चतुर्दशी को सप्तम्, प्रतिमा का अभ्यास करें,
घर न शयन करके नित मंदिर, जी में जाकर शांति वरें।।21।।

वैरागी से रागी हार गये, सारी परीक्षा पूर्ण हुई,
पन्ना नगर में आकर इनने, सप्तम प्रतिमा धारण की।
गिरी श्रेयांस में जाकर इनने, दसवी प्रतिमा धारण की,
वर्णी जी बन गए थे पप्पू, गुरुवर जी की पिच्छी ली।।22।।

सन् उन्नीस सौ बानवे, नौ अगस्त का दिन धन्य हुआ,
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरी जी में, दीक्षा का शुभयोग हुआ।
ऐलक दीक्षा धारण करके, संयम पथ पर पग है धरा,
गुरुवर विराग सागर जी ने, बहुत बड़ा उपकार करा।।23।।

शिष्य नम्रता देख गुरु ने, विनम्र सागर नाम दिया,
जो जितना झुकता है उतना, उठता है संदेश दिया।
विनम्रता मार्दव को लाती, धर्मों का वो सार कहा,
अन्तिम सार की प्राप्ति होवे, ऐसा शुभ आशीष दिया।।24।।

क्षमता यहाँ परखने चातुर्मास, अलग फिर करवाया,
यथायोग्य ऐलक जी ने भी, धर्म का परचम फैराया।
ग्यारह वर्षों तक ऐलक रह, मुनिपद को ये तरस रहे,
कब धारूँगा जिन मुद्रा मैं, मन ही मन में सोच रहे।।25।।

कोपीन का जब भार लगा तो, मुनि दीक्षा आवाहन किया,
सुनकर करुण प्रार्थना इनकी, गुरुवर ने स्वीकार किया।
ग्यारह वर्षों तक है सम्भाला, अब न भार वहन होता,
त्याग इसे अनगार बना दो, बार-बार है मन कहता।।26।।

ऐलक जी को देख पिता को, निज स्वरूप का भान हुआ,
द्रोणगिरी में गुरु विराग से, मुनि दीक्षा को प्राप्त किया।
पिता पुत्र जब मुनि ऐलक बन, बीना चातुर्मास किया।
त्याग धर्म के दिन मुनिवर ने, नश्वर देह को त्याग दिया,।।27।।

शुभ दिन आठ जून का प्यारा, ललितपुरी की पुण्य धरा,
ललित-ललित वो दिन था प्यारा, दो हजार त्रय वर्ष कहा।
इसमें हुई बीस और दीक्षा, जिसमें पहला नम्बर था,
मुनिश्री विनम्र सागर नाम ये, भक्तों को अति प्यारा था।।28।।

मानतुंग के लघु भ्राता, भक्तामर को सिखलाते हैं,
मानतुंग के सुन्दर मोती, ये घर-घर में बिखराते हैं।
भक्तामर का शिविर लगाते, भक्तामर वाले बाबा,
भक्तों के दु:खदर्द हरे हैं, भक्तामर वाले बाबा।।29।।





पूजन पद्धति लुप्त हुई लख, जन-जन में जागृति लाये,
शिविर लगाकर गाँव-गाँव में, शिविर प्रणेता कहलाये।
आनन्दोत्सव देखने हेतु, भक्त उमड़कर आते हैं,
भक्ति का यह महाकुंभ लख, रोम-रोम हर्षाते हैं।।30।।

जीवन है पानी की बूँद यह, जन-जन को पैगाम दिया,
अनुपम रचना रचकर गुरु ने, एक नया इतिहास रचा।
जन्म मृत्यु का बोध कराने, वाला यह महाकाव्य बना,
देश-विदेश व जैन अजैनों, की श्रद्धा का केन्द्र बना।।31।।

प्राकृत, उर्दू, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के ज्ञाता,
ज्ञानी-ध्यानी मेरे गुरुवर, ओजस्वी ये प्रखर वक्ता।
युवाप्रज्ञ निर्भीकोपदेशक, जन-जन के ये दुलारे हैं,
उच्चारण है विशेष गुरु का,उच्चारणाचार्य निराले हैं।।32।।

कलम चले जब गुरुवर की, रचनाएँ स्वयं ही रच जातीं,
जब-जब गुरुवर मुख खोले, कविताएँ स्वयं मुखरित होतीं।
शब्द-शब्द बन जाता गजल, ये कवि हृदय कहलाए हैं,
काव्य शिरोमणि सम्राट ये, काव्य भण्डार लगाये हैं।।33।।

आत्म तत्त्व का भान होत जब, गुरुवर जी ये सुनाते हैं,
मेरा जीवन कोरा कागज, भजन से ये समझाते हैंऽऽ।
अकाल मृत्यु वाला वो प्रवचन, ज्ञान पटों को खोल रहा,
कितने ही भव्यों को वो, नवजीवन का है स्रोत रहा।।34।।

कई वर्षों तक धर्म प्रभावना, करके जागृति फैलायी,
कई भव्य जीवों ने गुरु के, चरणों की शरणा पायी ।
मिलन हुआ गुरु शिष्य का, बाँसवाड़ा की पावन भू पर,
सूरि पद दे दिया गुरु ने, हम सब पर करुणा कर कर।।35।।

वृद्ध युवा बालक सब गुरुवर, को पाकर के धन्य हुए,
श्रमण-श्रमणी श्रावक-श्राविकाएँ, सबके पालनहार हुए ।
वीतराग शासन जयवंत हो, नारा गुरुवर ने ये दिया,
चरितार्थ करके उसको, कितनों पर है उपकार किया।।36।।

अल्प शब्द की ज्ञाता गुरुवर, क्या जीवन गाथा लिखती,
सागर के सम गुणों को ये, बूँद कहा तक कह सकती ।
इतने सुन्दर कमल-सरोवर, की छोटी-सी पँखुड़ी हूँ,
सूर्य बिना अस्तित्व न मेरा, सब कुछ अर्पण करती हूँ।।37।।

छोटी-सी ये पाती गुरुवर, मेरी श्रद्धा-सुमन हुई,
श्रेय गाथा लिख गुरुवर की, ''श्रिया'' ये पुलकित हुई ।
दसवें पदारोह पर गुरुवर, चरणों शीश झुकाती हूँ,
तुम हो मेरे वीर-प्रभु मैं, गौतम बनना चाहती हूँ।।38।।

।।इति।।





# चंबल के चंदन

बा.ब्र. श्रिया दीदी

जिस भूमि पर गुरु जन्में हैं, होऽऽ हम उसको शीश झुकाते हैं
चंबल के चंदन की गाथा-2 हम गाते और सुनाते हैं
जय हो........................

उस धरा को शीश झुकाते हैं,जहाँ गुरुवर जी ने जन्म लिया ऽऽऽ
उस रज को वन्दन करते हैं, जहाँ नन्हा-सा यह फूल खिला ऽऽऽ
गुरु चरणों अभिनन्दन करते-2 गाथा को-2 उनकी गाते है,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।1।।

सृष्टि सारी तब झूम उठी, जब गर्भाधान हुआ गुरु का ऽऽऽ
दशों दिशाएँ पावन हो गयीं, गृह में आनंद खूब हुआ ऽऽऽ
माता को देख ये लगता था-2 महावीर के-2 नंदन आये हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।2।।

शुभ दिन एक अक्टूबर का था, सन् उन्नीस सौ त्रेसठ प्यारा ऽऽऽ
शुभ मुहूर्त में बालक जन्मा, नन्हा-नन्हा प्यारा-ऽऽऽ
पिता मेरचन्द जी हर्ष उठे-2, मुन्ना-2 मुन्नी हर्षाये हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।3।।

पंडित जी ने गृह आकर के, बालक का दिव्य मुख देखा ऽऽऽ,
ऐसे ग्रह नक्षत्रों को देख, उनका चेहरा भी दमक उठा ऽऽऽ
शुभ लक्षण में जन्मे हैं ये-2, नटखट ये-2 अजब निराले हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।4।।

माता चमेली कहने लगी, कोई दिव्य पुरुष घर आया है ऽऽऽ,
आने से इसके जीवन में, नव आनन्द मंगल छाया है ऽऽऽ।
गुण रत्नों की ये खान बने-2, नवरत्न-2 नाम से बुलाते है,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।5।।

बालक की लीला देख-देख, माता चमेली हर्षेहैं ऽऽऽ,
पप्पू-पप्पू, प्यारा-प्यारा, जब आँगन में चहके हैं ऽऽऽ।
कुल के ध्रुवतारे बने रहें-2 घर आँगन-2 को चहकाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।6।।

उपसर्गों ने आकर के, बालक पर जब प्रहार किया ऽऽऽ,
पूरी की पूरी बस जा चढ़ी, मुस्काता हुआ बालक पाया ऽऽऽ।
सब विस्मय से यह देख रहे-2 कोई अतिशय-2 ही बतलाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।7।।

युवावस्था में वो पहुँचा, बालक अजब निराला था ऽऽऽ,
पण्डित श्री मेरचन्द जी ने, संस्कारों में पाला था ऽऽऽ।
धीरे-धीरे वो बढ़ने लगे-2, पढ़ने में-2 अव्वल आते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।8।।

ग्रेजुएट हो गए पप्पू जी, पोस्ट ग्रेजुएशन की अलख जगी ऽऽऽ,
कॉमर्स के स्टूडेण्ट रहे, बी.कॉम. की इनने शिक्षा ली ऽऽऽ।
अब एम.कॉम. करने का भी-2 पप्पू जी-2 मन में ठाने हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।9।।





अब एम.कॉम. की हुई परीक्षा, परिणाम की थी चिंता ऽऽऽ,
जिनपूजन अभिषेक करके, देने जाते थे परीक्षा ऽऽऽ।
उसका ही ये परिणाम हुआ-2 एम.कॉम. में-2 डिस्ट्रिक टॉपर हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।10।।

बेटे की कामयाबी पर, पिता मेरचन्द्र जी हर्ष उठे ऽऽऽ,
चहुँ ओर खुशियाँ छाने लगी, जैन समाज में ये पहले थे ऽऽऽ।
गोल्ड मैडल से सम्मान हुआ-2 सामाजिक-2 सम्मान पाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।11।।

बहुमुखी योग्यताओं के ये, प्रोफेसर पद से युक्त हुए ऽऽऽ,
लौकिक शिक्षा के साथ-साथ, अलौकिक का भी ज्ञान दिए ऽऽऽ।
बच्चों के प्यारे टीचर जी-2 ये गुरुजी-2 अजब निराले हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।12।।

मात-पिता के संस्कार जब, बार-बार प्रहार करें ऽऽऽ,
अध्यापन के ही साथ-साथ, शास्त्रों का ये अध्ययन करें ऽऽऽ।
कई शास्त्रों का अध्ययन करते-2 मुनि बन भी-2 ध्यान लगाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।13।।

शुभ दिन सुसमय शुभ नगर में, गुरु विराग का आगमन हुआ ऽऽऽ,
उनके आने से भिंड नगर, महका-महका पुलकित हुआ ऽऽऽ।
ये वर्तमान में वर्धमान-2 बन करके-2 भिण्ड पधारे हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।14।।

गुरुवर पधारे नगरी में, दर्शन को भीड़ लगी भारी ऽऽऽ,
नवरतन जी के अन्दर भी, गुरु दर्शन की थी प्यास जगी ऽऽऽ।
गुरुवर के दर्शन मिल ही गए-2 क्या मन्द-2 मंद मुस्काते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।15।।

जब पिताश्री ने गुरुवर से, नवरतन का परिचय करवाया ऽऽऽ,
बहुमुखी योग्यताओं को सुन, गुरुवर का मन भी हर्षाया ऽऽऽ।
तुमसे ही धर्म की वृद्धि हो-2 ऐसा गुरु-2 आशीष देते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।16।।

गुरुवर से नाता जुड़ने लगा, आना जाना भी होने लगा ऽऽऽ,
गुरुवर ने अपनी डायरी दे, लेखन का कार्य सौंप दिया ऽऽऽ।
लेखनी देख गुरुवर बोले-2, मोती से-2 अक्षर प्यारे हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।17।।

दिगम्बर और सोनगढ़ी में, आपस में विद्रोह हुआ ऽऽऽ,
गोली लगी पण्डित मेरचन्द्र को, बहुत बड़ा अनर्थ हुआ ऽऽऽ।
आशीष देने गुरुवर आये-2 धर्म वृद्धि-2 शब्द सुनाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।18।।

शादी के रिश्ते आने लगे, वैरागी मन को भाये ना ऽऽऽ,
लड़की वाले घर पर आये, फिर ऐसा अनोखा काम किया ऽऽऽ।
मुनि बनके ध्यान लगाने लगे-2 झूठा जग-2 इनको न भाये हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।19।।





मुनिवर श्री विराग सागर का, शुभ मंगल विहार हुआ ऽऽऽ,
सूना-सूना सब लगने लगा, जब गुरुवर का विहार हुआ ऽऽऽ।
गुरु चरणों की फिर आस जगी-2 संयम के-2 फूल खिलाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।20।।

संयम का भाव जगा मन में, राजेन्द्र भैया को साथ लिया ऽऽऽ,
दोनों ने लावन में जाकर, गुरुवर से व्रत को प्राप्त किया ऽऽऽ।
गुरु विराग के इन चिराग को-2 हम नित-2 शीश झुकाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।21।।

सन् उन्नीस सौ बानवे, नौ अगस्त का वो दिन प्यारा ऽऽऽ,
गुरुवर श्री विराग सागर ने, ऐलक दीक्षा संस्कार किया ऽऽऽ।
उपहार दिया संयम जिनने-2 उन गुरु की-2 महिमा गाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।22।।

गुरुवर ने नाम दिया प्यारा, झुकने की कला सिखाता है ऽऽऽ,
नम्रता से सम्यक् होता है, ये ही आगम बतलाता है ऽऽऽ।
इनकी लघुता को देख गुरु-2 विनम्र-2 सागर कहते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।23।।

योग्यता परखने को गुरुवर ने, अलग चौमासा करवाया ऽऽऽ,
अनुपम प्रभावना करते थे, फिर मुनि बनने मन ललचाया ऽऽऽ।
कब जिन मुद्रा धरूँगा मैं-2 ऐलक जी-2 मन में विचारे हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।24।।

कोपीन भार जब लगने लगी, तो मुनि दीक्षा आह्वान किया ऽऽऽ,
दो हजार त्रय वर्ष रहा, अरु आठ जून का दिन प्यारा ऽऽऽ।
धन्य हुई ललितपुर की धरती-2 जिन मुद्रा-2 को जब धरते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।25।।

दश दिशा को अम्बर बना लिया, भू बनी सलौना बिस्तर थी ऽऽऽ,
बन गये श्रमण हो गए नग्न, हुई बीस संग में दीक्षा थी ऽऽऽ।
मुनि विनम्र सागर कहलाए-2 भक्तों के-2 मन में समाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।26।।

पूज्येषु गुणानुवादो पूजा, ये सबको समझाते हैं ऽऽऽ,
पूजा का भाव अर्थ भक्ति, ये सबको समझाते हैं।
आनन्दोत्सव कहते हैं उसे-2 ये अद्भुत-2 शिविर लगाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।27।।

भक्तामर वाले बाबा कहाते, उसका शिविर लगाते हैं ऽऽऽ,
मुनि मानतुंग की भक्ति को, ये अद्भुत ही समझाते हैं ऽऽऽ।
अन सुलझे जीवन प्रश्नों को-2 भक्तामर-2 से सुलझाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।28।।

धन्य हुई बाँसवाड़ा की धरती, गुरु शिष्य का मिलन हुआ ऽऽऽ,
पूज्य गुरुवर ने भी सूरि पद, देने का मन में सोच रखा ऽऽऽ।
बारह-बारह-दश के शुभ दिन-2 सूरिश्वर-2 ये कहलाये हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।29।।





अंग्रेजी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत आदि भाषा के ज्ञाता हैऽऽऽ,
शब्दों से इनका नाता है, शब्दों-अर्थों के ज्ञाता हैऽऽऽ।
उच्चारण विशेष इनका हैं-2, उच्चारणा-2 चार्य कहाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।30।।

जीवन पानी की बूँद है, सबको गुरुवर समझाते हैं ऽऽऽ,
गुरुवर की अनुपम कृति है ये, इससे गुरु जाने जाते हैं ऽऽऽ।
शब्दों, छंदों का ज्ञान इन्हें-2, मीठे-2 भजन सुनाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।31।।

कविता भजन मुक्तक गजल, इनको पाकर के सफल हुई ऽऽऽ,
मुनियों में श्रेष्ठ कवि कहे, कवि हृदय उपाधि प्राप्त हुई ऽऽऽ।
है काव्य सरोवर के ये हंस-2 काव्य सम्राट-2 जग में कहाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।32।।

छोटे - छोटे हैं शिष्य गुरु के, सबको ये समझाते हैं ऽऽऽ,
विज्ञ मुनि विदुषी आर्यिकाएँ हैं, जिन धर्म की शान बढ़ाते हैं ऽऽ
जयवंतो वीतराग शासन-2 ये नारा-2 गुरु जी लगाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।33।।

वृद्ध साधकों से प्रीति इन्हें, ये गुरुवर जग से न्यारे हैं ऽऽऽ,
ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिकाऐं है, जो गुरु चरणों में रहते हैं ऽऽऽ।
कई श्रावक-श्राविकाएँ हैं-2 चतुर्विध-2 संघ के नायक हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।34।।

ये स्याद्वाद की मूरत है, द्वादश अंगों का ज्ञान भरा ऽऽऽ,
जयधवल महाधवला आदि, सिद्धान्तों का है सार भरा ऽऽऽ।
छोटे-छोटे शिष्य इनके-2 समयसार की-2 महिमा गाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।35।।

कवि हृदय काव्य सम्राट निराले, पूजन शिविर प्रणेता हैं ऽऽऽ,
बाबा भक्तामर वाले ये, उच्चारणाचार्य निराले हैं ऽऽऽ।
शब्दों का मर्म भरा इनमें-2 ओजस्वी-2 वक्ता प्यारे हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।36।।

अजूबों में ये सबसे निराले, इनने अजूबा कर डाला ऽऽऽ,
अजूबों की उस ताज नगरी में, बरस गयी विनम्र धारा ऽऽऽ।
हम तीनों का उद्धार किया-2 माँ-बाप का-2 फर्ज निभाते हैं
चम्बल के चंदन की गाथा....।।37।।

आचार्य पदारोहण पर गुरुवर चरणों शीश झुकाते है ऽऽऽ,
आप रहें चिरायु इस धरती पर, यही भाव उर लाते हैं ऽऽऽ।
मुक्ति श्री को गुरु प्राप्त करें-2 हम''श्रिया''-2 भावना भाते हैं,
चम्बल के चंदन की गाथा....।।38।।

मेरा इक ख्वाब, तुमसा बन जाऊँ,
तेरे गुण मैं भी आज, रंग जाऊँ।
तेरी आँखों का नूर, बन जाऊँ,
मैं तेरा 'कोहिनूर', बन जाऊँ।।

।।इति।।

श्रमण मुनि श्री विज्ञसागर जी महाराज

श्रमण मुनि श्री विनतसागर जी महाराज

श्रमण मुनि श्री विनयसागर जी महाराज

श्रमण मुनि श्री विनंदसागर जी महाराज

श्रमण मुनि श्री विनुतसागर जी महाराज

ऐलक श्री विश्वकुंदसागर जी महाराज

ऐलक श्री विप्रभसागर जी महाराज

ब्र. आशीष भैया

श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

श्रमणी आर्यिका विनेहश्री माताजी

श्रमणी आर्यिका वितपश्री माताजी

श्रमणी आर्यिका विशमश्री माताजी

श्रमणी आर्यिका विपुलश्री माताजी

श्रमणी आर्यिका विश्रेयश्री माताजी

श्रमणी आर्यिका विमुदश्री माताजी

क्षुल्लिका विराजश्री माताजी

ब्र. सुनीता दीदी

बा.ब्र. शुभी दीदी

बा.ब्र. श्रिया (प्राची) दीदी

बा.ब्र. वर्षा दीदी

बा.ब्र. दिव्या दीदी

बा.ब्र. मिति दीदी

# चम्बल के चन्दन

## (एक झलक)

| | | |
|---|---|---|
| नाम | : | रतनस्वरूप जैन (नवरत्न) |
| पिता का नाम | : | पं. श्री मेरचन्द जी जैन<br>(समाधिस्थ मुनि 108 विश्वकीर्तिसागर जी) |
| माता का नाम | : | श्रीमती चमेलीदेवी जैन |
| जन्म तिथि | : | 01 अक्टूबर 1963, भिण्ड |
| शिक्षा | : | एम.कॉम. (डिस्ट्रिक टॉप) 8 वर्ष सर्विस |
| ऐलक दीक्षा | : | 09/08/1992, द्रोणगिरि |
| मुनि दीक्षा | : | 08/06/2003, ललितपुर |
| आचार्य पदारोहण | : | 12/12/2010, बाँसवाड़ा (राज.) |
| रुचि | : | काव्य रचना, वैज्ञानिक,<br>सैद्धान्तिक, मनोवैज्ञानिक खोज<br>चिंतन, लेखन व गहन तर्कशलीलता |
| दीक्षा गुरु | : | गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव |